RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

RIICO | missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

# 12th HISTORY

# ARJUN BATCH

## राजा, किसान और नगर
## आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ

# ONESHOT

पूरा चैप्टर एक ही क्लास में ...

22 सितंबर 2026 || 03:30 PM



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

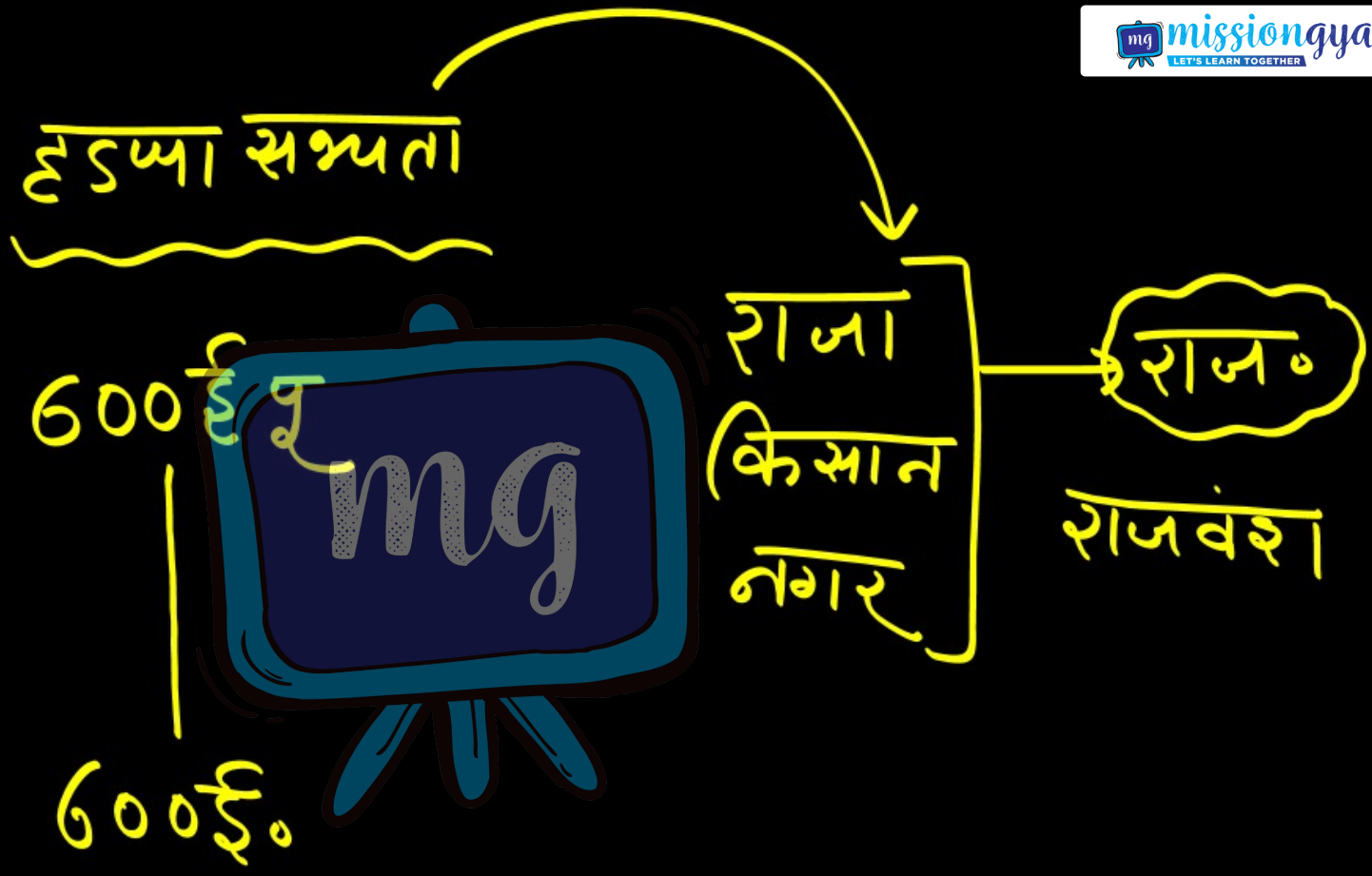

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER






हड़प्पा सभ्यता के बाद लगभग 1500 वर्षों में कई बदलाव हुए—

- सिंधु क्षेत्र में ऋग्वेद की रचना हुई।
- उत्तर भारत, दक्कन व कर्नाटक में कृषक बस्तियाँ विकसित हुईं।
- दक्कन व दक्षिण भारत में चरवाहा बस्तियाँ बनीं।
- लगभग 1000 ई.पू. से महापाषाणों में शव दफनाने की परंपरा शुरू हुई।
- शवों के साथ लोहे के औजार व हथियार भी दफनाए जाते थे।

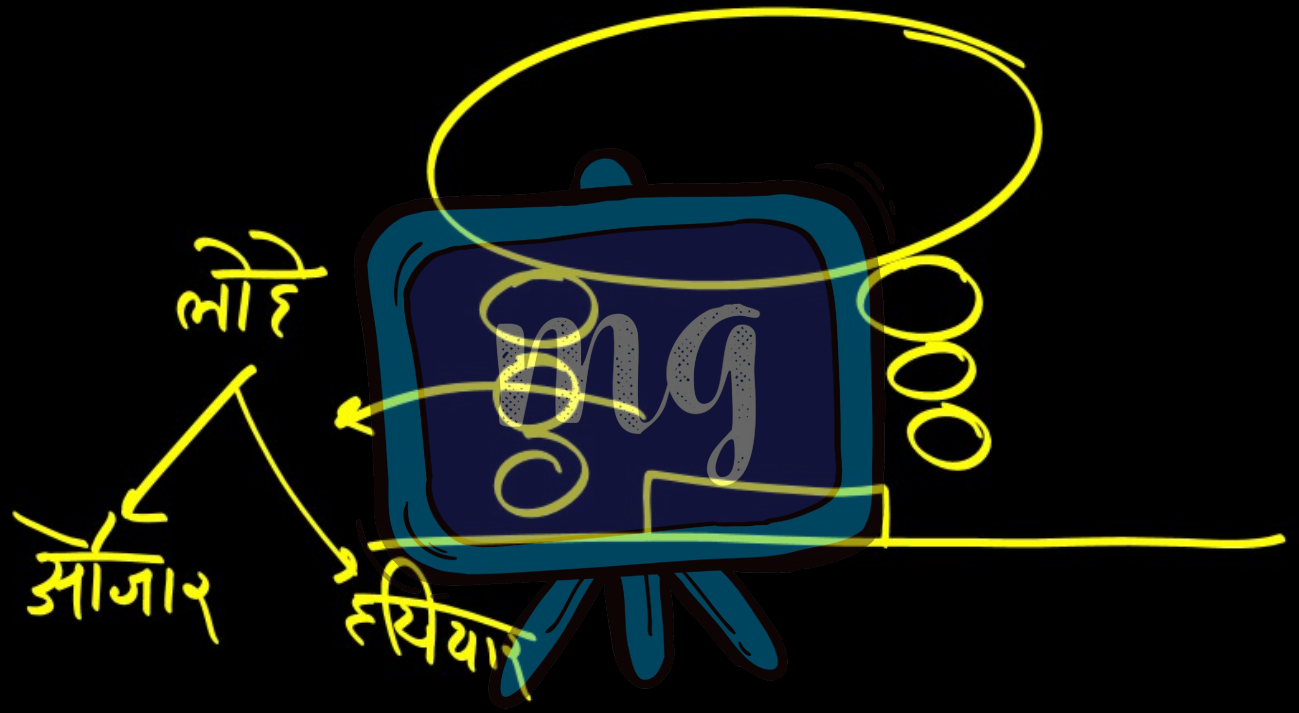
लोहे
ओजार
हथियार

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

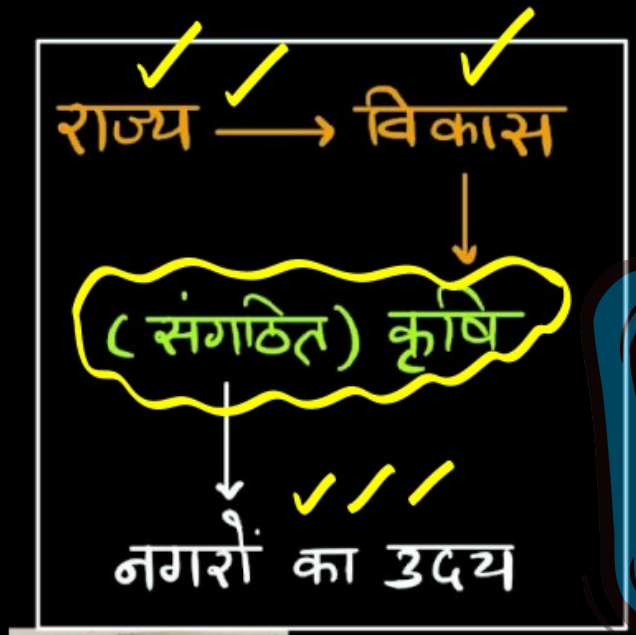






## 600 ई. पूर्व से आये नये परिवर्तन :

- आरम्भिक राज्य, साम्राज्य और रजवाड़े विकसित हुए।
- कृषि उत्पादन संगठित हुआ।
- उपमहाद्वीप में नए नगर विकसित हुए।
- इतिहासकार अभिलेखों, सिक्कों और चित्रों से इतिहास का अध्ययन करते हैं।
- इन स्त्रोतों से भी पूरी जानकारी नहीं मिलती।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

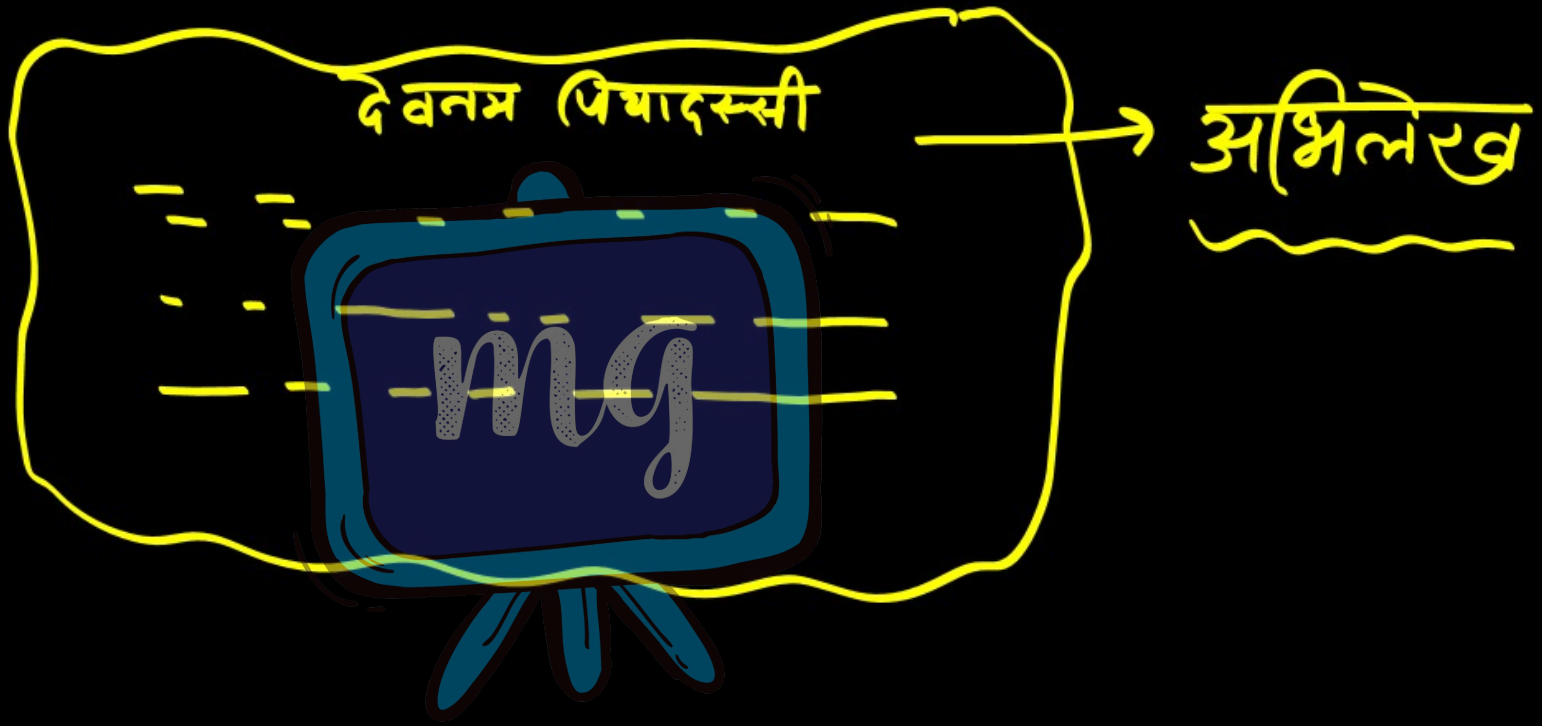

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



एक अभिलेख, साँची (मध्य प्रदेश), लगभग द्वितीय शताब्दी ई.पू.

# अभिलेख

- अभिलेख पत्थर, धातु या मिट्टी जैसी कठोर सतहों पर खुदे होते हैं।
- इनमें शासकों की उपलब्धियाँ, कार्य और विचार लिखे होते हैं।
- स्थायी ऐतिहासिक प्रमाण हैं। तिथि न मिलने पर लेखन शैली से काल निर्धारण किया जाता है।
- प्राचीनतम अभिलेख प्राकृत भाषा में लिखे गए।
- तमिल, पालि और संस्कृत में भी अभिलेख मिले हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

# 9. अभिलेख

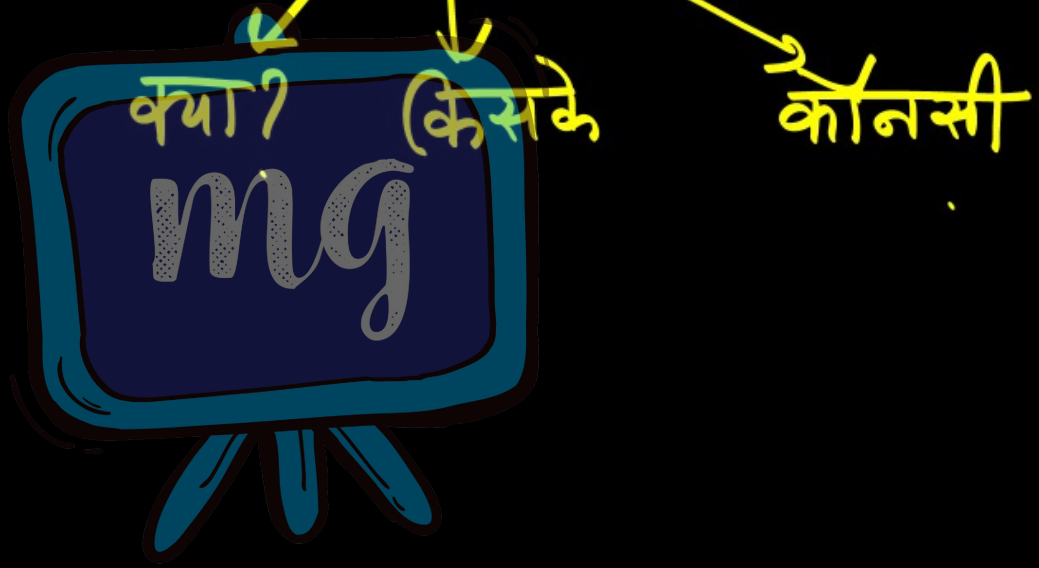

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

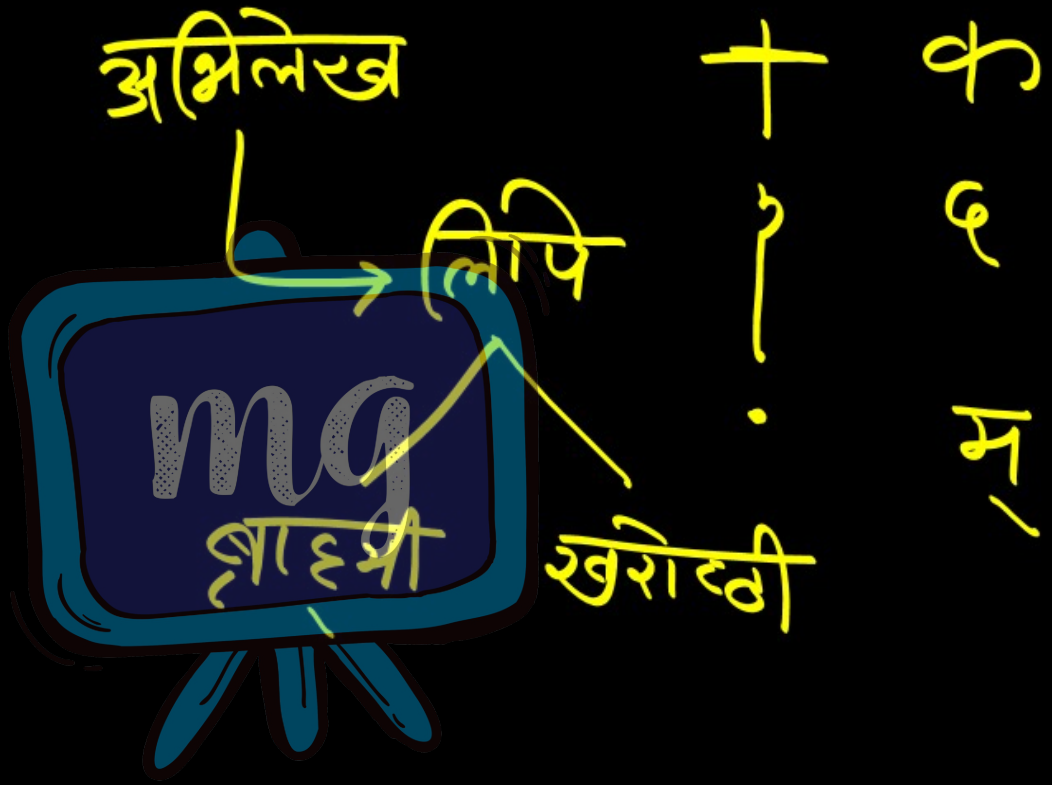

# प्रिंसेप और पियदस्सी




- 1830 के दशक में जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों को पढ़ा।
- इन लिपियों का प्रयोग प्रारम्भिक अभिलेखों और सिक्कों में हुआ।
- कई अभिलेखों व सिक्कों पर 'पियदस्सी' नाम मिला।
- कुछ अभिलेखों में 'असोक' नाम भी मिला।

अशोक = देवनम् पियादस्सी



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- बौद्ध ग्रंथों में असोक को प्रसिद्ध शासक बताया गया है।
- विद्वानों ने अभिलेखों और ग्रंथों से राजवंशों की वंशावलियाँ तैयार कीं।
- इससे आरंभिक भारत के राजनीतिक इतिहास को नई दिशा मिली।
- बाद में राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों के संबंधों का अध्ययन किया गया।
- ये संबंध थे, लेकिन सीधे नहीं थे।

Q. जेम्स प्रिंसेप ?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

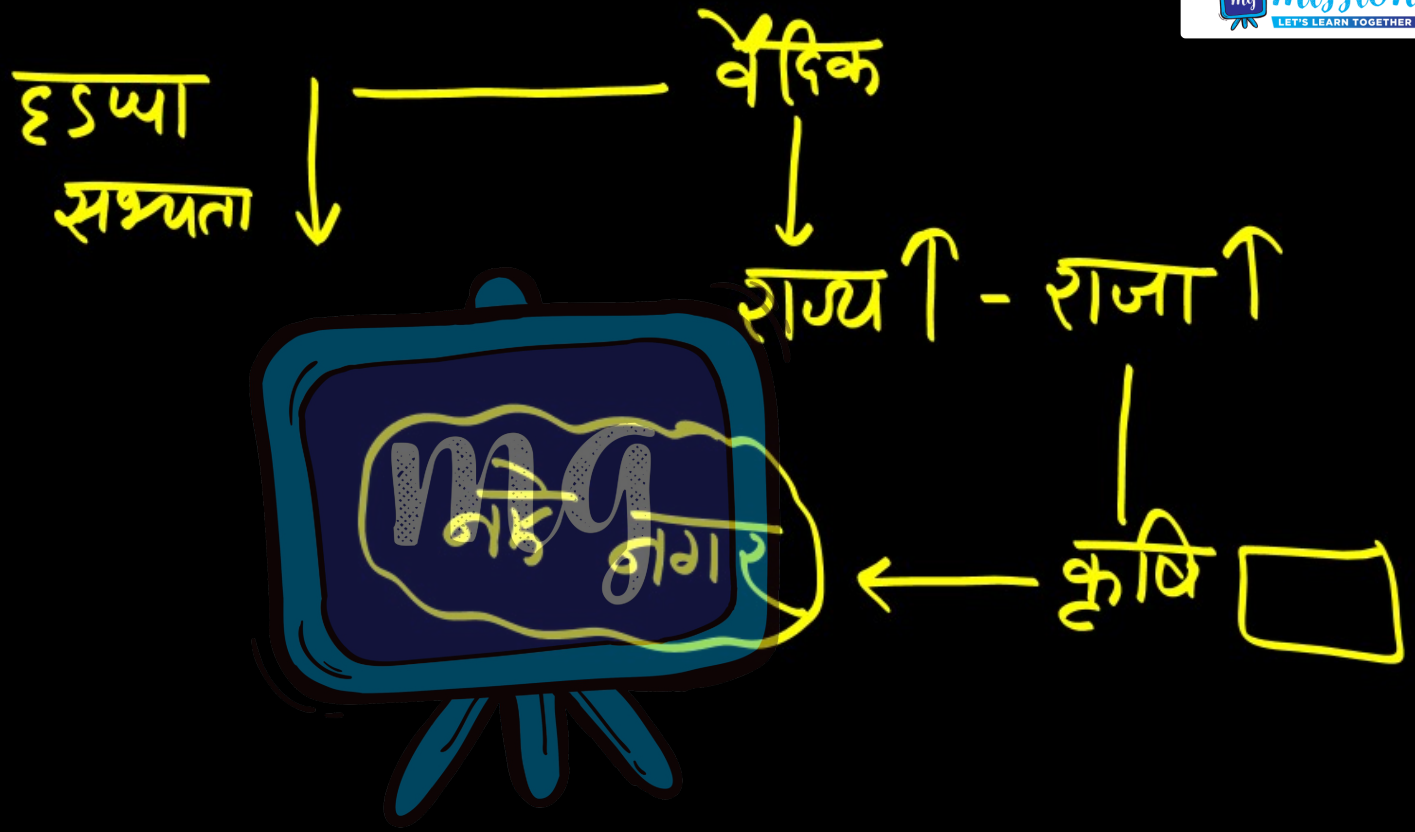

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

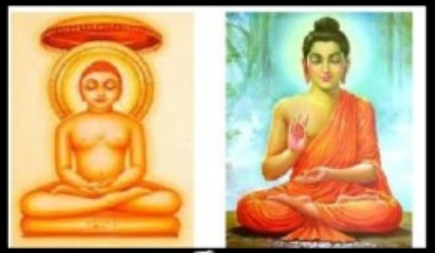



16 महाजनपद

# प्रारम्भिक राज्य

## सोलह महाजन पद

जनपद = जन + पद

- ऐसा भूखंड जहां कोई जन अपना पांव रखता है अथवा बस जाता है।
- 600 ई. पूर्व का समय भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी काल था क्योंकि यह काल आरंभिक राज्यों, नगरों, लोहे के बढ़ते प्रयोग तथा सिक्कों के विकास के लिए प्रमुख था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

महा + जन + पद

↳ भूखण्ड

जहां लोगो के पैर

↳ निवास



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

# महाजनपद

- इसी काल में बौद्ध तथा जैन सहित विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं का विकास हुआ।
- बौद्ध तथा जैन ग्रंथों में ही महाजनपद नाम से सोलह राज्यों का उल्लेख मिलता है।

1. वज्जि
2. मगध
3. कौशल
4. कुरु
5. पांचाल
6. गांधार
7. अवन्ति
8. मल्ल
9. मत्सय
10. अंग
11. चेदि
12. काशी
13. कम्बोज
14. वत्स
15. शूरसेन
16. अश्मक

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

समूह मिलकर गणराज्य

राजा

वज्जि मल्ल

2

महाजनपद

16

गान्धार

कम्बोज




14

2 भारत (बाहर)

14 भारत

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

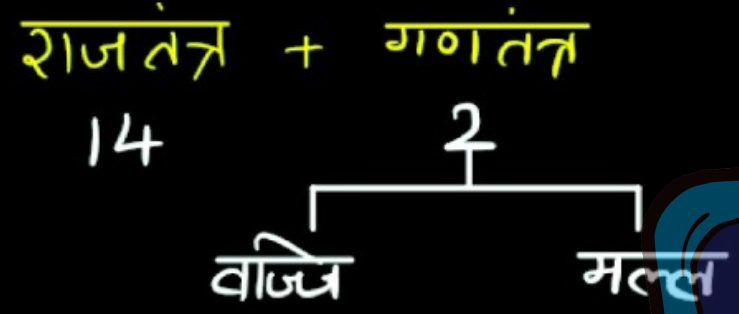


गण संघ

लोगों का समूह शासन

- 14 स्थानों पर राजतंत्र था।
- 2 स्थानों वज्जि तथा मल्ल में गणतंत्र था।
- अधिकांश महाजनपदों में राजा का शासन था।
- 'गण' और 'संघ' के नाम से प्रसिद्ध राज्यों में कई लोगों का समूह शासन करता था और इस समूह का प्रत्येक व्यक्ति राजा कहलाता था।
- भगवान महावीर तथा भगवान बुद्ध इन्हीं गणों से संबंधित थे।

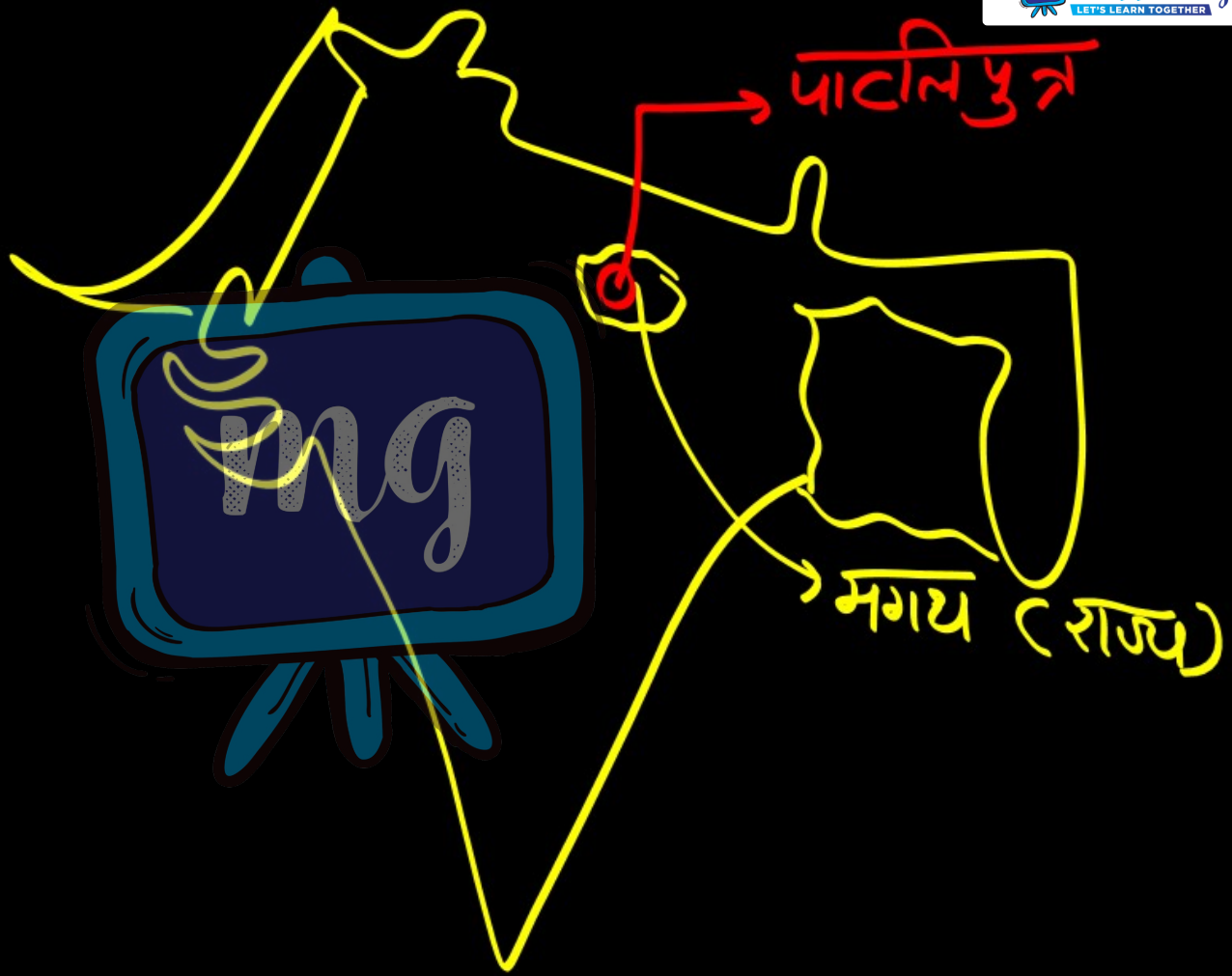
पाटलिपुत्र
मगध (राज्य)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



कर + भेंट




- प्रत्येक महाजनपद की किलेबंद राजधानी होती थी।
- राजधानी, सेना और प्रशासन के लिए अधिक धन की आवश्यकता थी।
- लगभग 600 ई.पू. में धर्मशास्त्रों में शासन के नियम बनाए गए।
- शासक से क्षत्रिय होने की अपेक्षा की जाती थी।
- शासकों का कार्य किसानों, व्यापारियों और शिल्पकारों से कर तथा भेंट वसूलना माना जाता था।
- संपति जुटाने का एक वैद्य उपाय पड़ौसी राज्यों पर आक्रमण करके धन इक्ट्ठा करना भी माना जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

# Q. महाजनपद ?

क्या? कितनी? कौनसी?

Q. धर्मसूत्र / धर्मशास्त्र

→ राजा क्या?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- धीरे – धीरे कुछ राज्यों ने अपनी **स्थायी सेनाऐं** और **नौकरशाही तंत्र तैयार** कर लिये जबकि बाकी राज्य अब भी **कृषक वर्ग** से नियुक्त की जाने वाली **सहायक सेना** पर निर्भर थे।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

## सोलह महाजनपदों में प्रथम - मगध



- 600 ई. पूर्व - 400 ई. पूर्व में मगध (आधुनिक बिहार) सबसे शक्तिशाली महाजनपद बन गया।
- कारण :-
  1. खेती की उपज
  2. लोहे की खदानें
  3. जंगली क्षेत्रों में हाथी
  4. आवागमन सस्ता व सुलभ होता था।
  5. शासकों की नीतियों

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

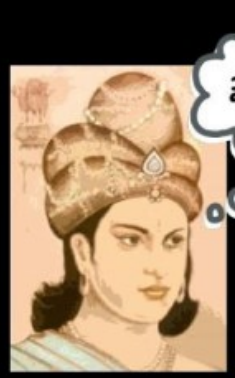


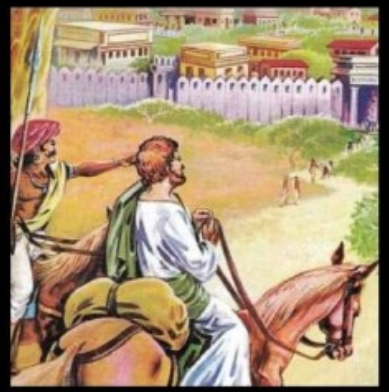

इंण्डिका

अर्थशास्त्र

जैन, बौद्ध, संस्कृत ग्रंथ

## मौर्य वंश के बारे में जानकारी प्राप्त करना :

1. साहित्यिक स्त्रोत:
   - a. मेगस्थनीज की 'इण्डिका'।
   - b. कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र'।
   - c. जैन, बौद्ध और पौराणिक ग्रंथ।
2. पुरातात्विक स्त्रोत:
   - a. अशोक के शिलालेख और स्तंभ लेख।
   - b. मौर्यकालीन मूर्तियाँ।

- असोक ने पत्थरों और स्तंभों पर संदेश लिखवाए।
- अभिलेखों द्वारा धम्म का प्रचार किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

## भाषाऐं और लिपियां :

- **भाषा :** जो बोलने में प्रयुक्त हो जैसे – प्राकृत, अरामेइक, यूनानी, हिन्दी।
- **लिपि :** जो लिखने में प्रयुक्त हो देवनागिरी लिपि, ब्राह्मी लिपि, खरोष्ठी लिपि।
- अशोक के अधिकांश अभिलेख प्राकृत भाषा के हैं जबकि पश्चिमोत्तर से मिले अभिलेख – अरामेइक व यूनानी भाषा के है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- प्राकृत भाषा वाले अभिलेख ब्राह्मी लिपि में लिखे गये थे जबकि पश्चिमोत्तर के अभिलेख खरोष्ठी लिपि में लिखे हैं।
- अरामाईक तथा यूनानी लिपियों का प्रयोग अफगानिस्तान के अभिलेखों में किया गया है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN



missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

धम्म

बड़ों के प्रति आदर

सन्न्यासियों ब्राह्मणों को आदर

दास के प्रति उदारता

सहिष्णुता

× जीव हिंसा

धर्म =

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

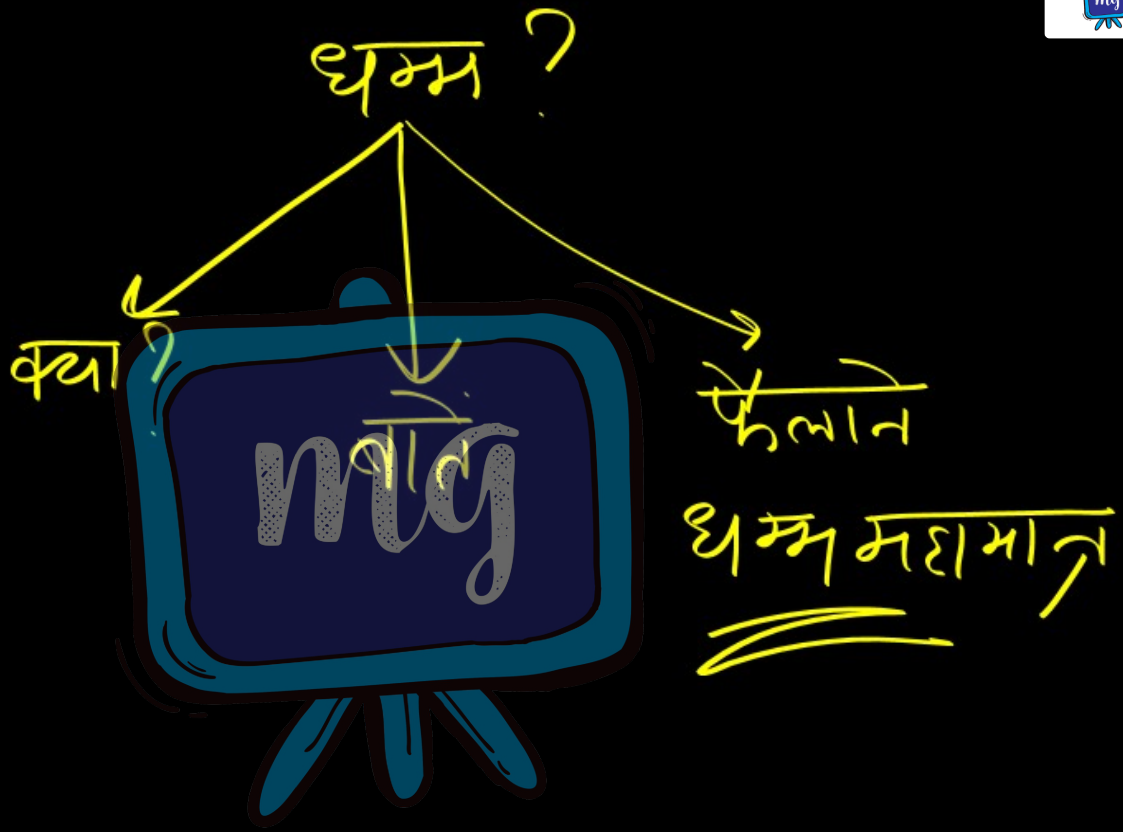

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

## मौर्य साम्राज्य का प्रशासन :

- मौर्य साम्राज्य के 5 प्रमुख राजनीतिक केन्द्र थे

1. राजधानी – पाटलिपुत्र
2. तक्षशिला (वर्तमान – पाकिस्तान)
3. उज्जयिनी
4. तोसालि (उड़ीसा में)
5. सुवर्णगिरि (दक्षिण में कर्नाटक)

} प्रांतीय केंद्र/प्रांत

- इस सबका उल्लेख असोक के अभिलेखों में किया गया है।
- आधुनिक पाकिस्तान के पश्चिमोत्तर सीमांत प्रांत से लेकर आंध्र प्रदेश, उड़ीसा और उत्तराखंड तक हर स्थान पर एक जैसे संदेश उत्कीर्ण किये गये थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

## प्रशासनिक व्यवस्था :

- विशाल मौर्य साम्राज्य में एक समान प्रशासन संभव नहीं था।
- साम्राज्य के क्षेत्र भौगोलिक रूप से बहुत विविध थे।
- प्रशासनिक नियंत्रण राजधानी और प्रांतीय केन्द्रों के आसपास अधिक था।
- इन प्रांतों का चयन बड़े ध्यान से किया गया था। तक्षशिला व उज्जयिनी दोनों ही लंबी दूरी वाले महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग पर स्थित थे। जबकि सुवर्णगिरि (सोने के पहाड़) कर्नाटक में सोने की खदान के लिए उपयोगी था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

## सम्राट के अधिकारियों के कार्य :

(मेगस्थनीज के विवरण का एक अंश) :

1. अधिकारी नदियों और भूमि मापन की देखरेख करते थे
2. नहरों से जल वितरण का निरीक्षण किया जाता था।
3. शिकारी कार्यों पर इनाम या दंड दिए जाते थे।
4. कर वसूली और भूमि संबंधी व्यवसायों की निगरानी होती थी।
5. लकड़हारे, बढ़ई, लोहार और खनिक भी निरीक्षण में थे।

## सैनिक गतिविधियां : (मैगस्थनीज द्वारा)

❖ सेना के संचालन के लिए एक समति दशा छः उपसमितियां थीं। उपसमितियों के कार्य :-

1. पहली उपसमिति – नौसेना का संचालन करना
2. दूसरी उपसमिति – यातायात व खानपान का
3. तीसरी उपसमिति – पैदल सैनिकों का संचालन ।
4. चौथी उपसमिति – अखारोहियों का संचालन ।
5. पाँचवीं उपसमिति – रथरोहियों का संचालन
6. छठी उपसमिति – हाथियों का संचालन करना।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

**दूसरी उपसमिति के दायित्व विभिन्न प्रकार के थे-**

i. उपकरणों को ढोने के लिए बैलगाड़ियों की व्यवस्था करना।

ii. सैनिकों के लिए भोजन और जानवरों के लिए चारे की व्यवस्था करना।

iii. सैनिकों की देखभाल के लिए सेवकों और शिल्पकारों की नियुक्ति करना।

❖ अर्थशास्त्र में सैनिक और प्रशासनिक संगठन का विस्तृत विवरण मिलता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यूनानी स्त्रोतों के अनुसार मौर्य सम्राट के पास 6 लाख पैदल सैनिक, 30 हजार घुड़सवार, 9 हजार हाथी थे।



## मौर्य साम्राज्य का महत्व–

- मौर्य काल भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण काल था।
- मौर्यकालीन कला और मूर्तियाँ इसकी प्रमुख पहचान थीं।
- असोक के अभिलेख अन्य शासकों से भिन्न थे।
- राष्ट्रवादी नेताओं ने असोक से प्रेरणा ली।
- मौर्य साम्राज्य लगभग 150 वर्ष चला।
- इसका नियंत्रण पूरे उपमहाद्वीप में समान नहीं था।
- इसके पतन के बाद नए शासक और रजवाड़े उभरे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

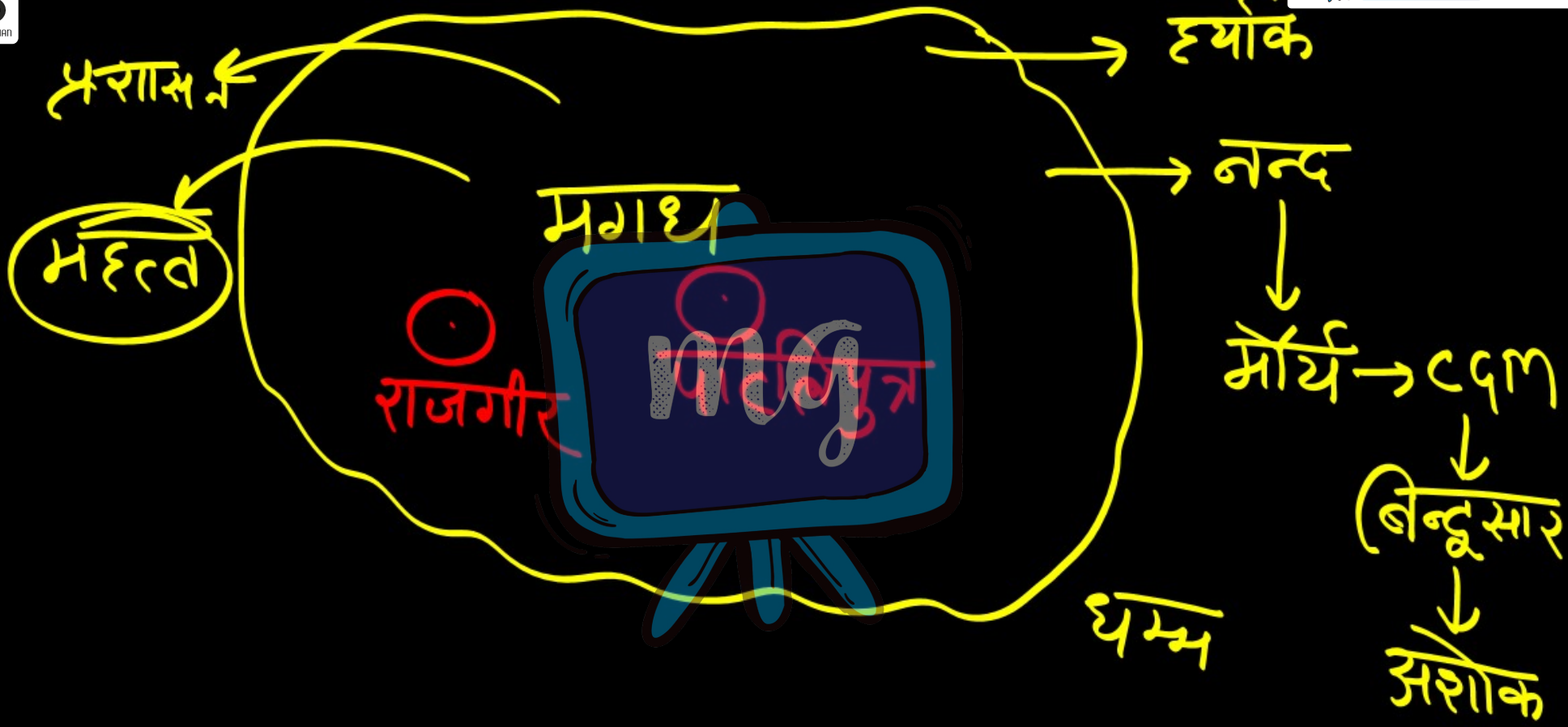

उत्तर = राजा → कर → स्थायी → वंशानुगत

दक्षिण = सरदार → भेंट → अस्थायी ✓ ✗



तमिलकम - TN, AP

(तमिल) KR, TL

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER




## राजधर्म के नवीन सिद्धांत

### दक्षिण के राजा और सरदार

- उपमहाद्वीप के दक्कन और उससे दक्षिण के क्षेत्र में स्थित तमिलकम (तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और केरल) में (i) चोल, (ii) चेर, (iii) पाण्ड्य जैसी सरदारियों का उदय हुआ।
- ये राज्य बहुत ही समृद्ध और स्थायी सिद्ध हुए।
- प्राचीन तमिल संगम ग्रंथों में सरदारियों का विवरण है। इससे इन सरदारों की जानकारी मिलती है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

## संगम काल

R.S. Sharma - 300-600 ई

'प्राचीनतम साहित्य तमिल भाषा'

पाण्ड्य → 1) मदुरा

2) कपाटपुरम

3) मदुरा

तोल्तकापियम (व्याकरण ग्रंथ)

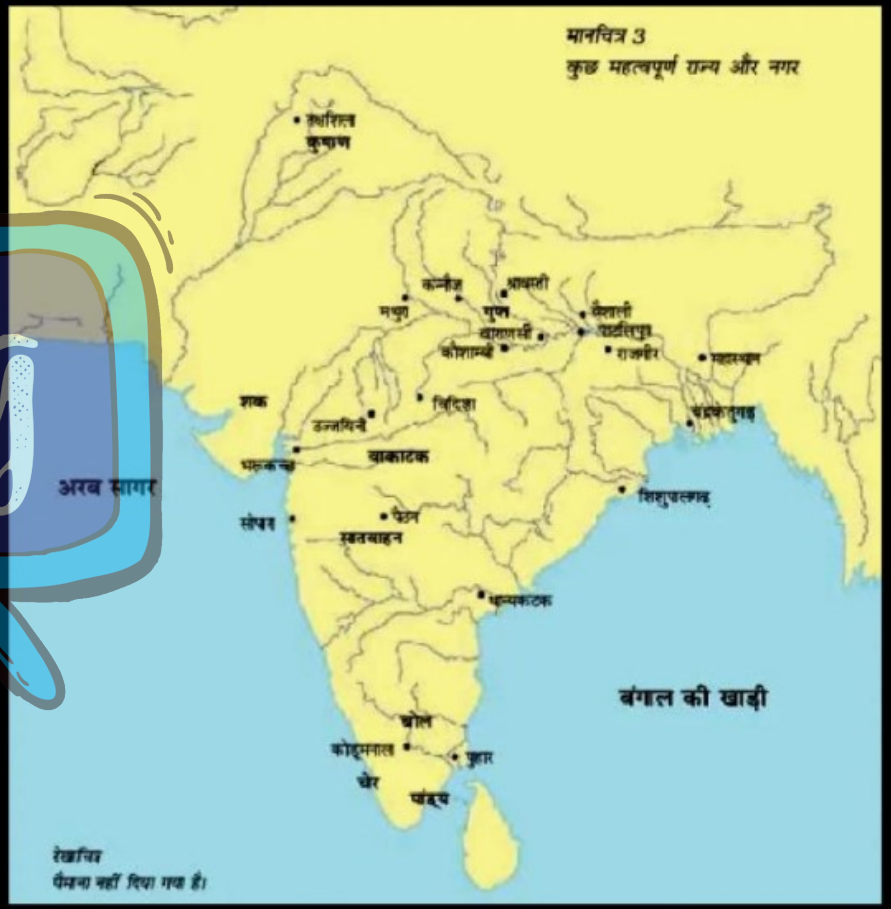

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER




* वंशानुगत/नहीं
* कार्य
  - अनुष्ठान
  - युद्ध
  - मध्यस्थता

## सरदार और सरदारी

- सरदार शक्तिशाली व्यक्ति होता था; पद वंशानुगत हो भी सकता था, नहीं भी।
- उसके समर्थक प्रायः उसके खानदान के लोग होते थे।
- कार्य:
  (i) अनुष्ठानों का संचालन
  (ii) युद्ध में नेतृत्व
  (iii) विवादों का समाधान
- सरदार लोगों से भेंट लेकर समर्थकों में बाँटता था।
- सरदारी में सामान्यतया कोई स्थायी सेना या अधिकारी नहीं होते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. सरदार

Q. सरदारिया

Q. दक्षिण भारत

Q. राजा सरदार




Q. संग्राम काल







कई सरदार और राजा लम्बी दूरी के व्यापार द्वारा राजस्व जुटाते थे इसके 2 उदाहरण हैं -

(i) सातवाहन शासक (200 ई. पू. 200 ई.)- मध्य -एवं पश्चिमी भारत के क्षेत्रों पर शासन था।

(ii) शक शासक मध्य एशियाई मूल के – पश्चिमोत्तर और पश्चिम के भागों पर शासन था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

# दैविक राजा



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER




भारतीय साहित्य - सिथियन

युची कबीला ⟶ 5 शाखा

चाऊ आंग शाखा

**दैविक राजा :-**

- राजाओं के लिए उच्च स्थिति प्राप्त करने का एक साधन विभिन्न देवी देवताओं के साथ जुड़ना था।

**कुषाण :-**

- मध्य एशिया से लेकर पश्चिमोत्तर भारत तक शासन करने वाले कुषाण शासकों ने (100 ई. पू. 100 -ई. तक)। इस उपाय का सबसे अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया।
- भारत में कुषाण वंश का पहला विख्यात शासक कुजुल-कडफिसस था। इसने अपने सिक्कों को रोमन सम्राट आगस्टस के सिक्कों के अनुरुप जारी किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- कुषाण मध्य एशिया से भारत आए और पश्चिमोत्तर भारत तक शासन किया।
- कुजुल कडफिसस भारत का पहला प्रसिद्ध कुषाण शासक था।
- कनिष्क प्रमुख शासक था; 78 ई. से शक संवत शुरु हुआ।
- उसकी राजधानियाँ पेशावर और मथुरा थीं।
- उसने कश्मीर में कनिष्कपुर बसाया।
- कनिष्क बौद्ध धर्म का समर्थक था और चौथी बौद्ध संगति कराई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- उसने सिल्क मार्ग पर नियंत्रण स्थापित किया।
- उसे 'द्वितीय असोक' भी कहा जाता है।
- अश्वघोष, नागार्जुन, वसुमित्र और चरक उसके दरबार में थे।
- कुषाण इतिहास के प्रमुख स्रोत अभिलेख, साहित्य, सिक्के और मूर्तियाँ हैं।
- कुषाण शासक स्वयं को देवतुल्य दिखाते थे और 'देवपुत्र' उपाधि धारण करते थे।

कनिष्क को II अशोक क्यों कहा जाता था?

1. साम्राज्य का विस्तार
2. बौद्ध - 4th
3. दरबारी शहर
4. सिक्के
5. अभिलेख

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

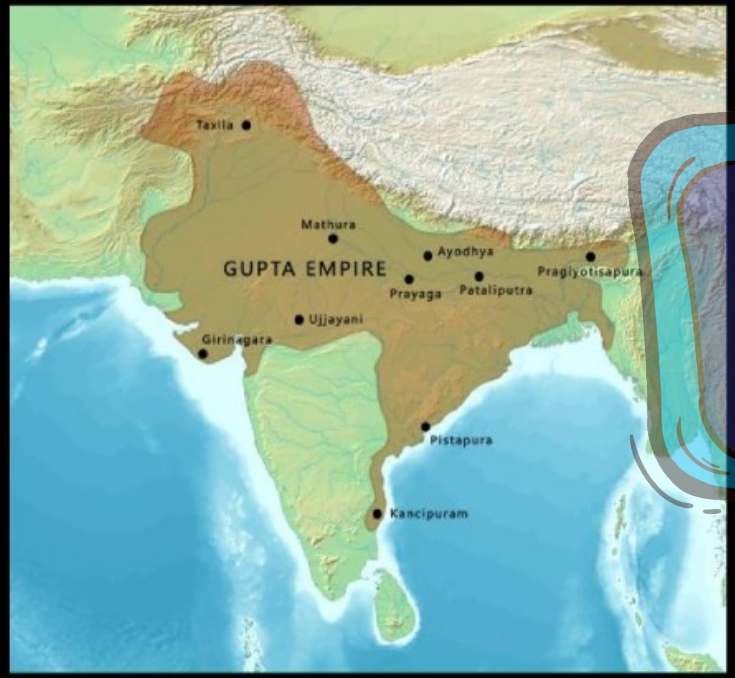


## गुप्त काल :-

- चौथी शताब्दी में गुप्त सहित कई बड़े साम्राज्य उभरे।
- साम्राज्य सामंतों पर निर्भर थे; शक्तिशाली सामंत राजा बन जाते थे।
- गुप्त वंश के प्रमुख शासक:
- श्रीगुप्त – संस्थापक
- घटोत्कच
- चन्द्रगुप्त प्रथम
- समुद्रगुप्त – 'भारत का नेपोलियन'

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

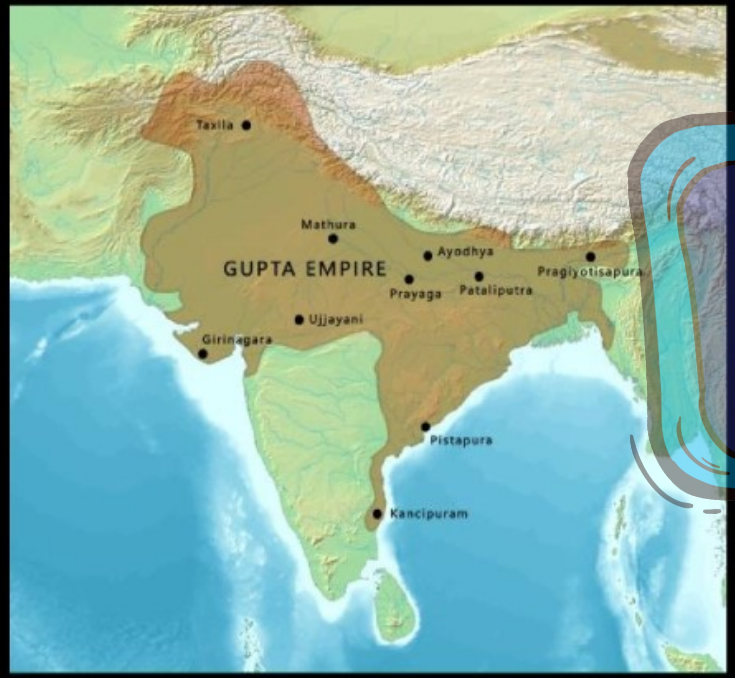


- चन्द्रगुप्त द्वितीय – विक्रमादित्य; फाह्यान भारत आया
- कुमारगुप्त – अश्वमेघ यज्ञ
- स्कन्दगुप्त – अंतिम सफल शासक; सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण
- गुप्त इतिहास के स्रोत साहित्य, सिक्के, अभिलेख और प्रशस्तियाँ हैं।
- समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति हरिषेण ने संस्कृत में लिखी।

## बदलता हुआ देहात

### जनता में राजा की छवि

- अभिलेखों से प्रजा के विचार स्पष्ट नहीं होते।
- जनता के अनुभवों के लिखित प्रमाण बहुत कम हैं।
- इतिहासकार जातक और पंचतंत्र की कथाओं से जानकारी लेते हैं।
- ये कथाएँ पहले मौखिक थीं, बाद में लिखी गईं।
- जातक कथाएँ पालि भाषा में लिखी गईं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

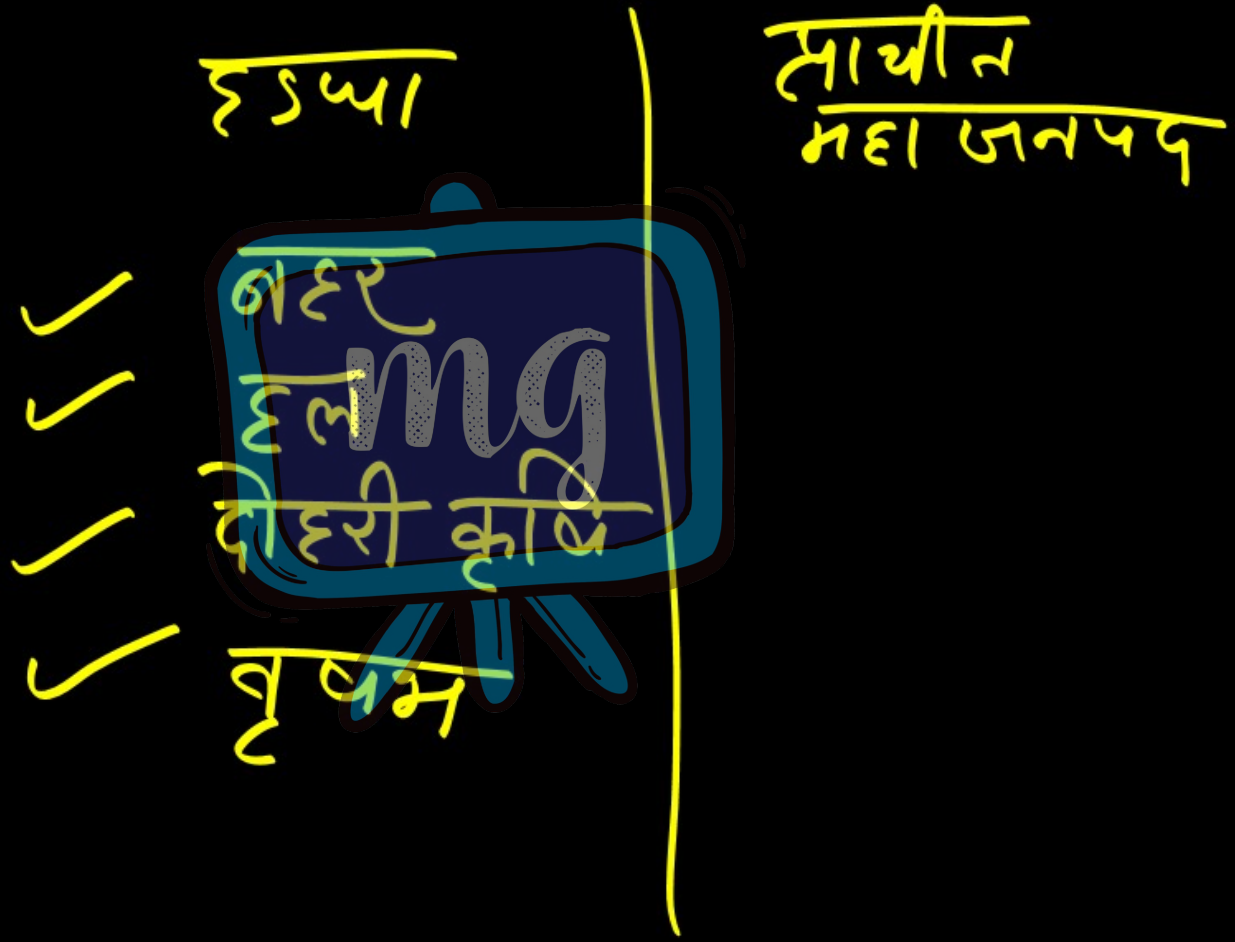

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



## उपज बढ़ाने के तरीके :-

- 600 ई.पू. से गंगा-कावेरी क्षेत्रों में हल का प्रयोग बढ़ा।
- अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में लोहे के फाल वाले हल उपयोग हुए।
- धान की रोपाई से उपज बढ़ी।
- पंजाब-राजस्थान में लोहे के हल का प्रयोग बहुत बाद में हुआ।
- पर्वतीय क्षेत्रों में कुदाल से खेती होती थी।
- कुएँ, तालाब और नहरें सिंचाई के प्रमुख साधन थे।
- सिंचाई साधन किसानों, राजाओं और प्रभावशाली लोगों द्वारा बनवाए जाते थे।

## ग्रामीण समाज में विभिन्नताऐं: -

- खेती की नई तकनीकों से यद्यपि उपज तो बढ़ी लेकिन इसके लाभ समान नहीं थे।
- खेती से जुड़े लोगों में उत्तरोत्तर भेद बढ़ता जा रहा था। कहानियों में विशेषकर बौद्ध कथाओं में, बड़े बड़े जमींदारों, छोटे किसानों तथा भूमिहीन खेतीहर श्रमिकों का उल्लेख मिलता है।
- पालि भाषा में गहपति शब्द का प्रयोग छोटे किसानों तथा जमींदारों के लिए किया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- बड़े-बड़े जमींदार और ग्राम प्रधान शक्तिशाली होते थे।
- ये प्रायः किसानों पर नियंत्रण रखते थे।
- ग्राम प्रधान का पद प्रायः वंशानुगत होता था।
- आरम्भिक तमिल संगम साहित्य में भी गांवों में रहने वाले विभिन्न वर्गों के लोगों का उल्लेख है।
- जैसे - वेल्लालर या बड़े जमींदार
  उल्वर या हलवाहा
  अणिमई या दास

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यह संभव है कि वर्गों की यह विभिन्नता भूमि के स्वामित्व, श्रम तथा नई प्रौद्योगिकी के उपयोग पर आधारित हो। ऐसी स्थिति में भूमि का स्वामित्व महत्वपूर्ण हो गया था। जिसकी चर्चा प्रायः विधि ग्रंथों में की जाती थी।

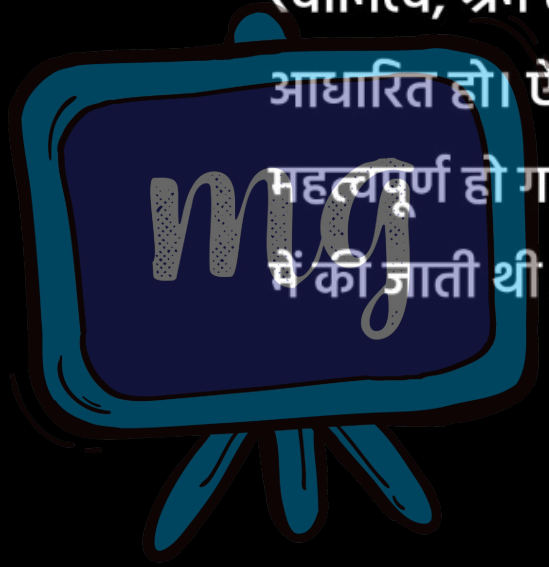

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

# प्रभावति गुप्त

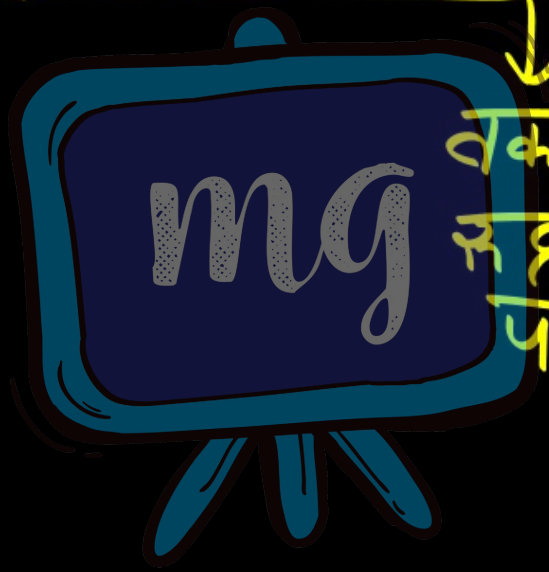


- बेटी
- वाकाटक नरेश रुद्रसेन की पत्नी
- भूदान
  - दंगुन
    - अचार्य चनालस्वामी

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

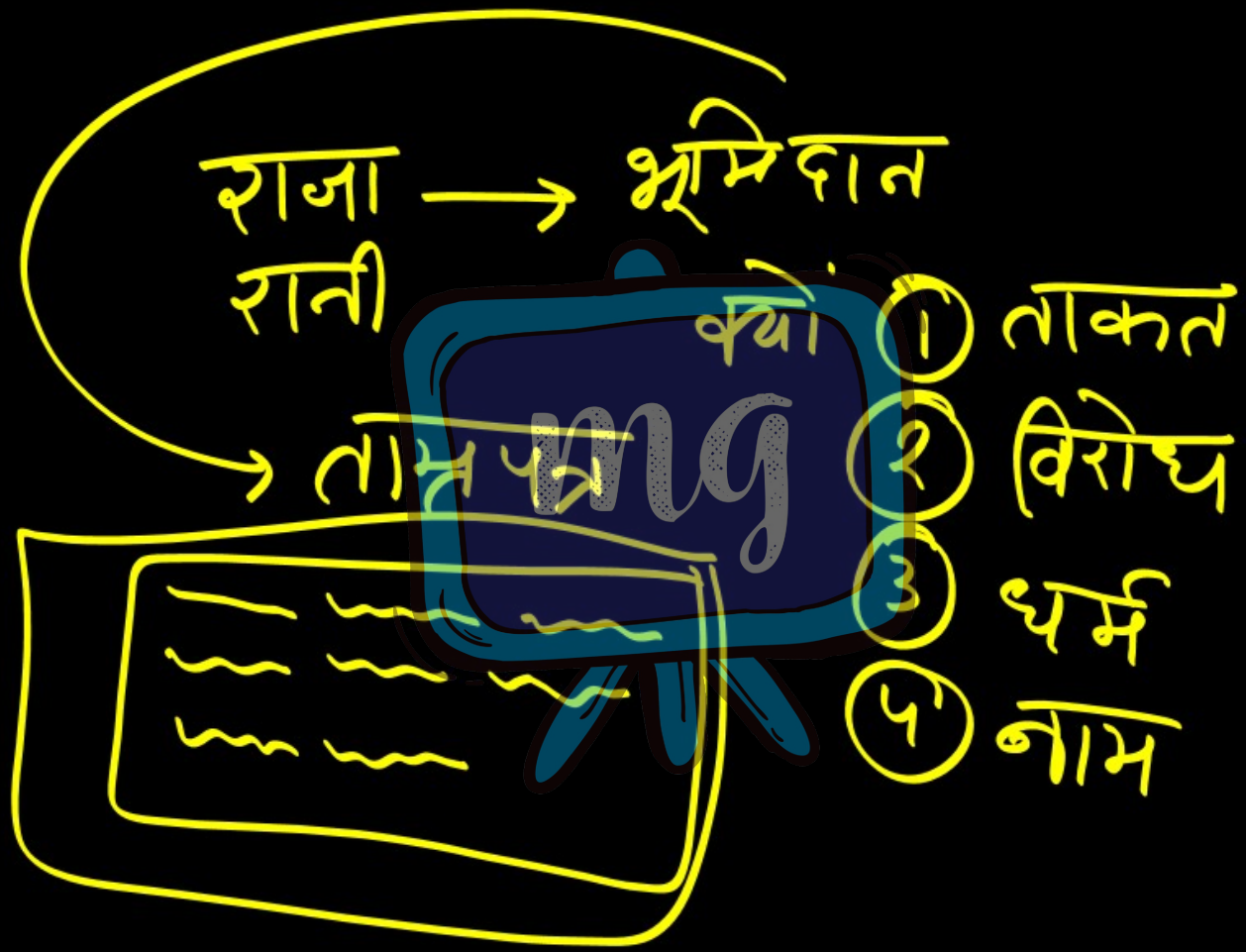

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

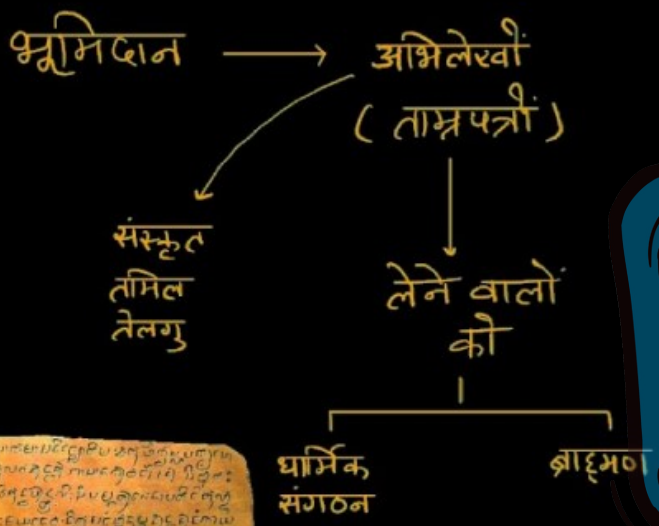


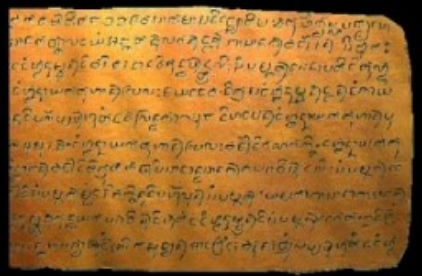

## भूमिदान और नये संभ्रात ग्रामीण :-

- ई. की आरंभिक शताब्दियों से भूमिदान के प्रमाण मिले हैं।
- भूमिदानों का कई बार उल्लेख अभिलेखों में भी है।
- ये अभिलेख पत्थरों व ताम्रपत्रों पर खुदे होते थे।
- ताम्र पत्रों वाले भूमिदान के अभिलेख संभवतः भूमिदान लेने वाले को दिये जाते थे।
- ये भूमिदान साधारण तौर पर धार्मिक संस्थाओं या ब्राह्मणों को दिये गये थे।
- अधिकांश अभिलेख संस्कृत में थे।था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



चन्द्रगुप्त II
प्रभावति गुप्त

+

वाकाटक राजा
रुद्रसेन II

## प्रभावती गुप्त द्वारा दान :-

- प्रभावती गुप्त चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री और वाकाटक शासक रुद्रसेन द्वितीय की पत्नी थी।
- प्रभावती भूमि की स्वामी थी और उसने भूमिदान किया।
- दान में दिए गाँव को कई करों व वस्तुओं से छूट मिलती थी।
- ग्रामीणों को नए प्रधान की आज्ञा माननी और भुगतान करना पड़ता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



चन्द्रगुप्त II + वाकाटक राजा रुद्रसेन II

प्रभावति गुप्त

- भूमिदान के अभिलेख भारत के कई क्षेत्रों में मिले हैं।
- भूमि की मात्रा और दानग्राही के अधिकार अलग-अलग थे।
- कुछ इतिहासकार भूमिदान को कृषि विस्तार का साधन मानते हैं।
- अन्य इसे कमजोर राजनीतिक नियंत्रण और समर्थक जुटाने से जोड़ते हैं।
- भूमिदान से राज्य और किसानों के संबंधों की जानकारी मिलती है।
- पशुपालक, शिकारी, मछुआरे, शिल्पकार आदि कई समूह राज्य के सीधे नियंत्रण से बाहर थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

## संभ्रांत वर्ग और शिल्पकार :

- शासक वर्ग और राजा किलेबंद नगरों में रहते थे। यद्यपि इनमें से अधिकांश स्थलों पर व्यापक रूप से खुदाई करना संभव नहीं है, क्योंकि आज भी इन क्षेत्रों में लोग रहते हैं।
- इसके पश्चात् भी पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। इनमें उत्कृष्ट श्रेणी के मिट्टी के कटोरे और थालियाँ मिली हैं जिन पर चमकदार कलई चढ़ी है। इन्हें उत्तरी कृष्ण मार्जित पात्र कहा जाता है। संभवतः इनका उपयोग अमीर लोग किया करते होंगे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इसके साथ ही सोने चाँदी, कांस्य, ताँबे, हाथी दाँत, शीशे जैसे तरह-तरह के पदार्थों के बने गहने, उपकरण, हथियार, बर्तन, सीप और पक्की मिट्टी मिली हैं।
- द्वितीय शताब्दी ई.पू. आते-आते हमें कई नगरों में छोटे दानात्मक अभिलेख प्राप्त होते हैं। इनमें दाता के नाम के साथ-साथ प्रायः उसके व्यवसाय का भी उल्लेख होता है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER





- इन अभिलेखों में नगरों में रहने वाले धोबी, बुनकर, लिपिक, बढ़ई, कुम्हार, स्वर्णकार, लौहकार, अधिकारी, धार्मिक गुरु, व्यापारी और राजाओं के बारे में विवरण लिखे होते हैं।
- कभी-कभी उत्पादकों और व्यापारियों के संघ का भी उल्लेख मिलता है जिन्हें श्रेणी कहा गया है।
- ये श्रेणियाँ संभवतः पहले कच्चे माल को खरीदती थीं फिर उनसे सामान तैयार कर बाजार में बेच देती थीं।
- यह संभव है कि शिल्पकारों ने नगर में रहने वाले संभ्रांत लोगों की बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए कई प्रकार के लौह उपकरणों का प्रयोग किया हो।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भूमिदान → राजा/रानी

→ संभ्रांत वर्ग




→ ताकतवर अमीर

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER




## उपमहाद्वीप और उसके बाहर का व्यापार :-

- छठी शताब्दी ई.पू. से ही उपमहाद्वीप में नदी मार्गों और भूमार्गों का जाल बिछ गया था और कई दिशाओं में फैल गया था।
- मध्य एशिया और उससे भी आगे तक भू-मार्ग थे।
- समुद्रतट पर बने कई बंदरगाहों से जलमार्ग मुख्य रूप से 2 बन गये थे।
  1. अरब सागर से होते हुए, उत्तरी अफ्रीका, पश्चिम एशिया तक फैल गया।
  2. बंगाल की खाड़ी से यह मार्ग चीन और दक्षिणपूर्व एशिया तक फैल गया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

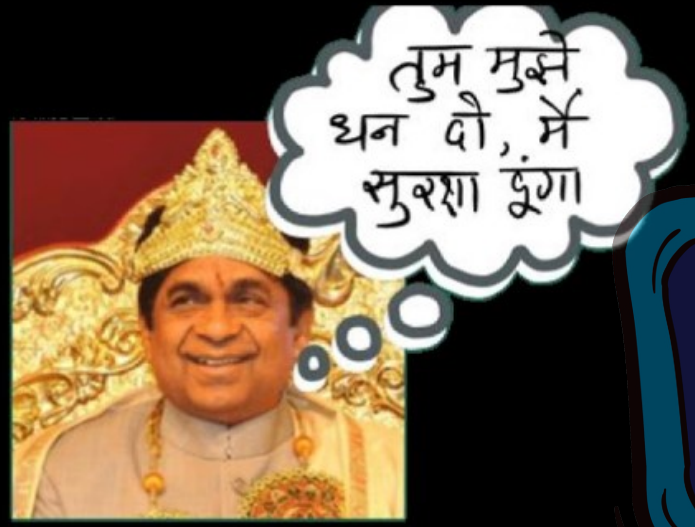


- शासकों ने प्रायः इन मार्गों पर नियंत्रण करने की कोशिश की और संभवतः वे इन मार्गों पर व्यापारियों की सुरक्षा के बदले उनसे धन लेते थे।
- इन मार्गों पर चलने वाले व्यापारियों में पैदल फेरी लगाने वाले व्यापारी तथा बैलगाड़ी और घोड़े खच्चरों जैसे जानवरों के दल के साथ चलने वाले व्यापारी होते थे।
- समुद्री मार्ग से भी लोग यात्रा करते थे जो खतरनाक तो थी, लेकिन बहुत लाभदायक भी होती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER







- तमिल भाषा में मसत्थुवन और प्राकृत में सत्थवाह और सेट्टी के नाम से प्रसिद्ध सफल व्यापारी बड़े धनी हो जाते थे।
- नमक, अनाज, कपड़ा, धातु और उससे निर्मित उत्पाद, पत्थर, लकड़ी, जड़ी-बूटी जैसे अनेक प्रकार के सामान एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाए जाते थे।
- रोमन साम्राज्य में काली मिर्च, जैसे मसालों तथा कपड़ों व जडी-बूटियों की भारी माँग थी।
- इन सभी वस्तुओं को अरब सागर के रास्ते भूमध्य क्षेत्र तक पहुँचाया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

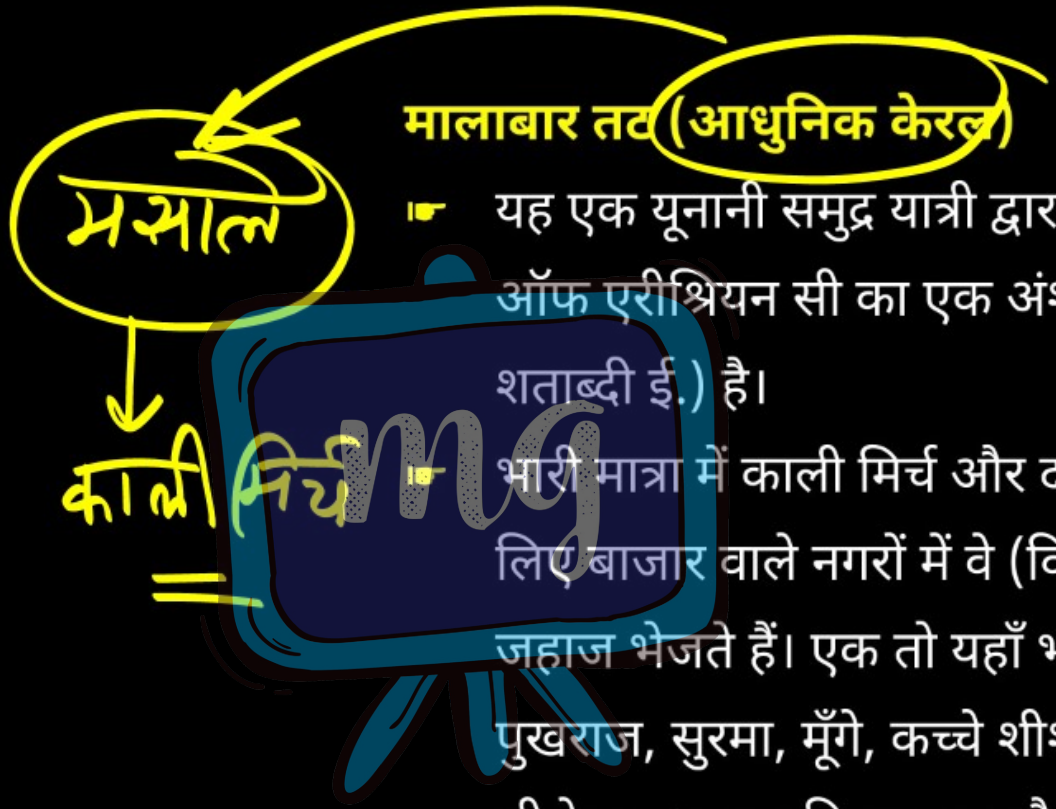


## मालाबार तट (आधुनिक केरल)

- यह एक यूनानी समुद्र यात्री द्वारा रचित पेरिप्लस ऑफ एरीथ्रियन सी का एक अंश (लगभग प्रथम शताब्दी ई.) है।
- भारी मात्रा में काली मिर्च और दाल चीनी खरीदने के लिए बाजार वाले नगरों में वे (विदेशी व्यापारी) जहाज भेजते हैं। एक तो यहाँ भारी मात्रा में सिक्कों, पुखराज, सुरमा, मूँगे, कच्चे शीशे, ताँबे, टिन और सीसे का आयात किया जाता है... इन बाजारों के आसपास भारी मात्रा में उत्पन्न काली मिर्च का निर्यात किया जाता है...

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इसके अलावा, उच्च कोटि के मोतियों, हाथी दाँत, रेशमी वस्त्र विभिन्न प्रकार के पारदर्शी पत्थरों, हीरों और काले नग और कछुए की खोपड़ी का भारी मात्रा में आयात होता है।
- तमिलनाडु के कोडुमनाल में बहुमूल्य और कम मूल्यवान पत्थरों से बनाए जाने वाले मूँगों के उद्योग के पुरातात्विक साक्ष्य मिले हैं। यह संभव है कि पेरिप्लस में वर्णित पत्थरों को इन्हीं तटवर्ती बंदरगाहरों तक स्थानीय व्यापारी लाए होंगे।

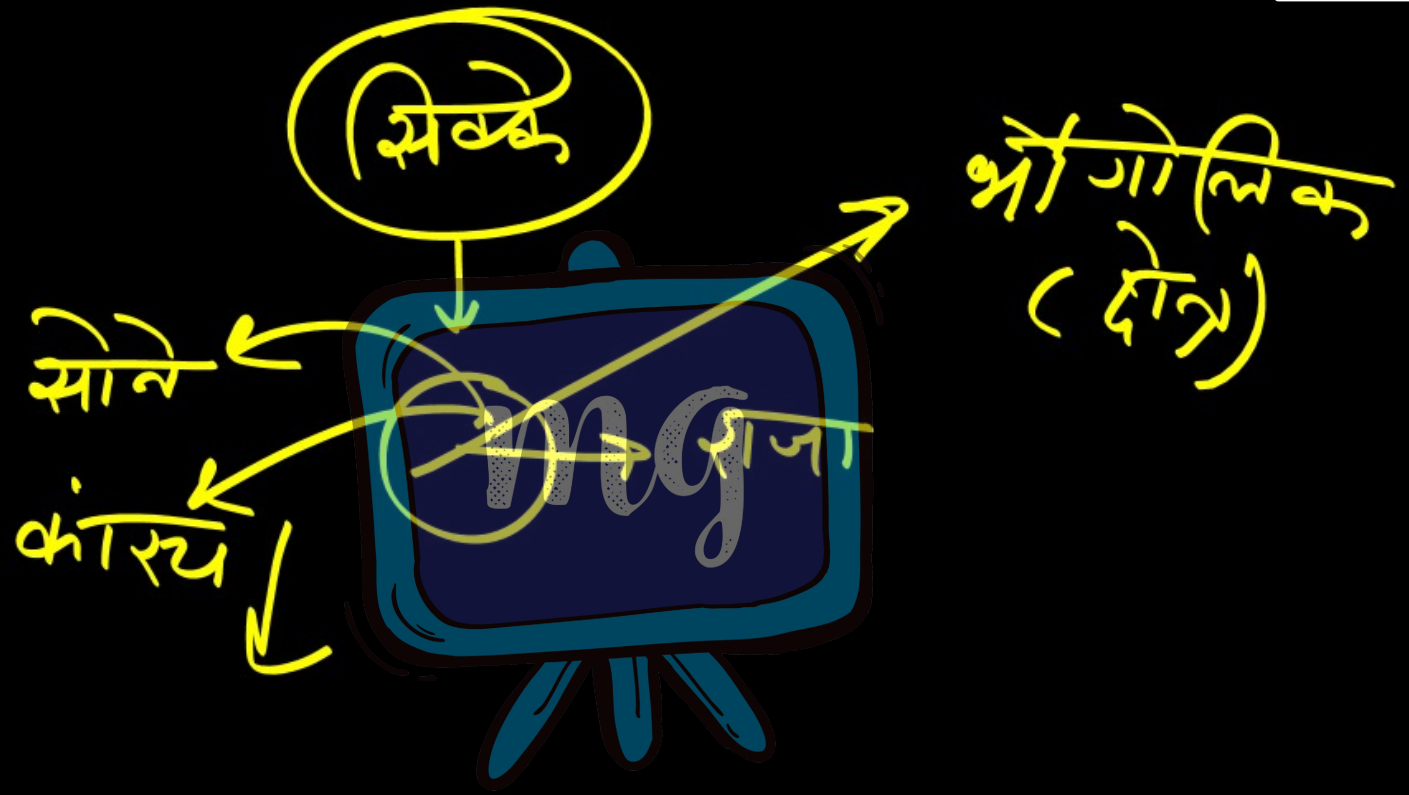
सेक्टर
सोने
कांस्य
भौगोलिक
(क्षेत्र)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER




## सिक्के और राजा :-

- व्यापार के लिए सिक्के के प्रचलन से विनिमय कुछ हद तक आसान हो गया था।
- चाँदी और ताँबे के आहत सिक्के (छठी शताब्दी ई.पू.) सबसे पहले ढाले गए और प्रयोग में आए। पूरे उपमहाद्वीप में खुदाई के दौरान इस प्रकार के सिक्के मिले हैं।
- आहत सिक्के - धातु के टुकड़े पर चिन्ह विशेष ठप्पा मारकर बनाये जाते थे। इन पर प्रतीकों को आहत किया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER




- मुद्राशास्त्रियों ने इनका और अन्य सिक्कों का अध्ययन करके उनके वाणिज्यिक प्रयोग के संभावित क्षेत्रों का पता लगाया है।

मुद्राशास्त्र – इसमें सिक्कों का अध्ययन होता है। इसके साथ ही उन पर पाये जाने वाले चित्र, लिपि आदि तथा उनकी धातु का विश्लेषण और जिन संदर्भ में इन सिक्कों को पाया गया है। उनका अध्ययन भी इसमें आता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- आहत सिक्के पर बने प्रतीकों को उन विशेष मौर्य वंश जैसे राजवंशों के प्रतीकों से मिलाकर पहचान करने की कोशिश की गई तो पता चला कि इन सिक्कों को राजाओं ने जारी किया था।
- यह भी संभव है कि व्यापारियों, धनपतियों और नागरिकों ने इस प्रकार के कुछ सिक्के जारी किए हों।
- शासकों की प्रतिमा और नाम के साथ सबसे पहले सिक्के हिंदु-यूनानी शासकों ने जारी किए थे जिन्होंने द्वितीय शताब्दी ई.पू. में उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित किया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- सोने के सिक्के बड़े पैमाने पर प्रथम शताब्दी ई. में कुषाण राजाओं ने जारी किए थे। इनके आकार और वजन तत्कालीन रोमन सम्राटों तथा ईरान के पार्थियन शासकों द्वारा जारी सिक्कों के बिल्कुल समान थे। उत्तर और मध्य भारत के कई पुरास्थलों पर ऐसे सिक्के मिले हैं।
- सोने के सिक्कों के व्यापक प्रयोग से संकेत मिलता है कि बहुमूल्य वस्तुओं और भारी मात्रा में वस्तुओं का विनिमय किया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

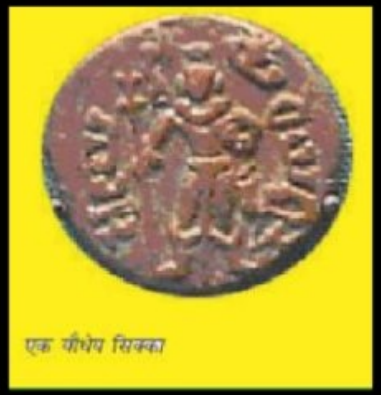
एक यौधेय सिक्का

- दक्षिण भारत के अनेक पुरास्थलों से बड़ी संख्या में रोमन सिक्के मिले हैं जिनसे यह स्पष्ट है कि व्यापारिक तंत्र राजनीतिक सीमाओं से बँधा नहीं था, क्योंकि दक्षिण भारत रोमन साम्राज्य के अंतर्गत न होते हुए भी व्यापारिक दृष्टि से रोमन साम्राज्य से संबंधित था।
- पंजाब और हरियाणा जैसे क्षेत्रों के यौधेय कबायली गणराज्यों (प्रथम शताब्दी ई.) ने सिक्के जारी किए थे। पुराविदों को इन शासकों द्वारा जारी ताँबे के सिक्के हजारों की संख्या में मिले हैं जो यौधेयों की व्यापार में रुचि और सहभागिता परिलक्षित होती है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- सोने के भव्य सिक्कों में से कुछ गुप्त शासकों ने जारी किए। इनके आरंभिक सिक्कों में प्रयुक्त सोना अति उत्तम था। इन सिक्कों के माध्यम से दूर देशों से व्यापार-विनिमय करने में आसानी होती थी जिससे शासकों को भी लाभ होता था।



एक गुप्त सिक्का

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- छठी शताब्दी ई. से सोने के सिक्के मिलने कम हो गए। संभवतः उस काल में कुछ आर्थिक संकट पैदा हो गया हो।
- कुछ का मानना है कि रोमन साम्राज्य के पतन के बाद दूरवर्ती व्यापार में कमी आई जिससे उन राज्यों, समुदायों और क्षेत्रों की संपन्नता पर असर पड़ा जिन्हें दूरवर्ती व्यापार से लाभ मिलता था।
- अन्य का कहना है, कि नगरों के साथ-साथ व्यापार के नवीन तंत्रों का उदय होने लगा था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इसके बाद भी अभिलेखों और ग्रंथों में सिक्के का उल्लेख होना दर्शाता है कि सिक्के मिलने कम इसलिए हो गये है कि वो प्रचलन में तो थे परन्तु उनका किसी ने संग्रह करके नहीं रखा था।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



## अभिलेखों का अर्थ कैसे निकाला जाता है?

- ब्राह्मी लिपि द्वारा खरोष्ठी लिपि का अध्ययन कर अभिलेखों का अर्थ निकाला गया।

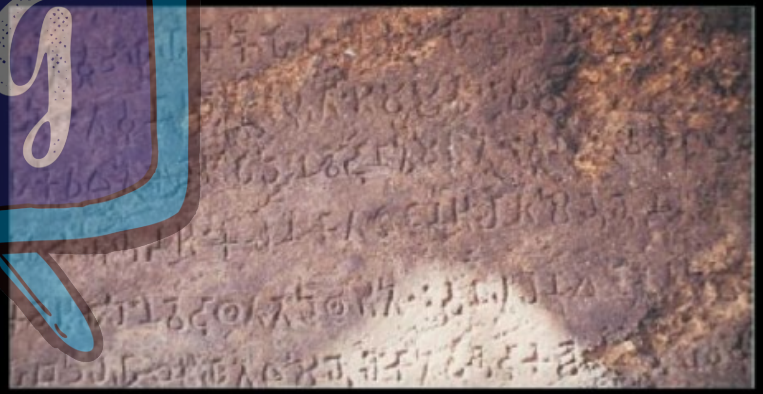

असोक का एक अभिलेख

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

## ब्राह्मी लिपि का अध्ययन

- आधुनिक भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त लगभग सभी लिपियों का मूल ब्राह्मी लिपि है।
- ब्राह्मी लिपि का प्रयोग असोक के अभिलेखों में किया गया है।



| | |
|---|---|
| † | क |
| d | च |
| C | ढ |
| ¢ | द |
| ४ | म |
| ſ | र |

ब्राह्मी और उसके समानार्थी देवनागरी अक्षर

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER







- 18वीं सदी से यूरोपीय विद्वानों ने भारतीय पंडितों की सहायता से आधुनिक बंगाली और देवनागरी लिपि में कई पांडुलिपियों का अध्ययन शुरू किया और उनके अक्षरों की प्राचीन अक्षरों के नमूनों से तुलना शुरू की।
- आरंभिक अभिलेखों का अध्ययन से विद्वानों को कई बार लगा कि ये संस्कृत में लिखे हैं जबकि प्राचीनतम अभिलेख वस्तुतः प्राकृत में थे।
- कई दशकों बाद जेम्स प्रिंसेप ने असोककालीन ब्राह्मी लिपि का 1838 ई. में अर्थ निकाल लिया।

## खरोष्ठी लिपि को कैसे पढ़ा गया?

- पश्चिमोत्तर के अभिलेखों में प्रयुक्त खरोष्ठी लिपि के पढ़े जाने की कहानी अलग है।
- इस क्षेत्र में शासन करने वाले हद-यूनानी राजाओं द्वारा बनवाए गए सिक्कों से जानकारी हासिल करने में आसानी हुई है।



हिन्द यूनानी शासक मेनाण्डर का एक सिक्का

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- इन सिक्कों में राजाओं के नाम यूनानी और खरोष्ठी में लिखे गए हैं। यूनानी भाषा पढ़ने वाले यूरोपीय विद्वानों ने अक्षरों का मेल किया। जैसे - अपोलोडोटस के अक्षर 'अ' का मेल किया ।
- प्रिंसेप ने खरोष्ठी में लिखे अभिलेखों की भाषा की पहचान प्राकृत भाषा के रूप में की थी इसलिए लंबे अभिलेखों को पढ़ना सरल हो गया।
- अभिलेखों से प्राप्त ऐतिहासिक साक्ष्य:
- इतिहासकारों के काम करने के तरीकों का पता लगाने के लिए आइये अशोक के दो अभिलेखों को ध्यान से पढ़े।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



## राजा के आदेश

राजन् देवानांपिय पियदस्सी यह कहते हैं: अतीत में मसलों को निपटाने और नियमित रूप से सूचना एकत्र करने की व्यवस्थाएँ नहीं थीं। लेकिन मैंने निम्नलिखित (व्यवस्था) की हैं।

लोगों के समाचार हम तक प्रतिवेदक सदैव पहुँचाएँ। चाहे मैं कहीं भी हूँ खाना खा रहा हूँ अन्त:पुर में हूँ विश्राम कक्ष में हूँ, गोशाले में हूँ या फिर पालकी में मुझे ले जाया जा रहा हो अथवा वाटिका में हूँ। मैं लोगों के विषयों का निराकरण हर स्थल पर करूँगा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

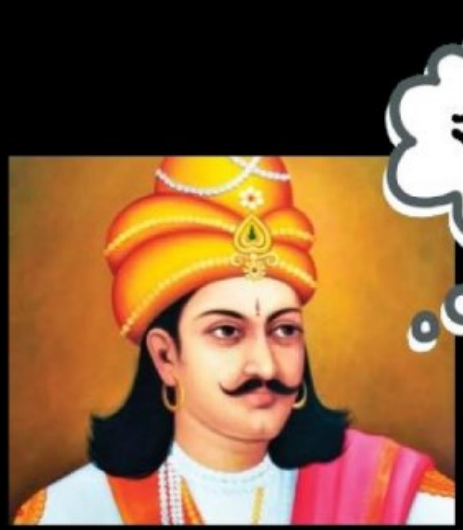


- इस अभिलेख में असोक का नाम नहीं लिखा है।
- इसमें असोक द्वारा अपनाई गई उपाधियों का प्रयोग किया गया है जैसे कि देवानांपिय अर्थात् देवताओं का प्रिय और 'पियदस्सी' यानी 'देखने में सुन्दर' ।
- असोक नाम अन्य अभिलेखों में मिलता है जिसमें उनकी उपाधियाँ भी लिखी हैं।
- इन अभिलेखों का परीक्षण करने के बाद अभिलेखशास्त्रियों ने पता लगाया कि उनके विषय, शैली, भाषा और पुरालिपिविज्ञान सबमें समानता है, अतः ये अभिलेख एक ही शासक ने बनवाया होंगे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- असोक ने अपने अभिलेखों में कहा है कि उनसे पहले के शासकों ने रिपोर्ट एकत्र करने की व्यवस्था नहीं की थी।
- क्या यह असोक का वक्तव्य सही है? इसके लिए इतिहासकारों को बार-बार अभिलेखों के कथनों का परीक्षण करना पड़ता है।
- कुछ शब्द ब्रैकेट में लिखे हैं? अभिलेख शास्त्री प्रायः वाक्यों के अर्थ स्पष्ट करने के लिए ऐसा करते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इतिहासकार इस प्रकार परीक्षण करते हैं कि यदि राजा के आदेश यातायात मार्गों के किनारे
- और नगरों के पास प्राकृतिक पत्थरों पर उत्कीर्ण थे, तो क्या वहाँ से आने-जाने वाले लोग उन्हें पढ़ने के लिए रुकते थे?
- अधिकांश लोग प्रायः पढ़े-लिखे नहीं थे।
- क्या पाटलिपुत्र में प्रयुक्त प्राकृत उपमहाद्वीप में सभी स्थानों के लोग समझते थे?
- क्या राजा के आदेशों का पालन किया जाता था?
- इन प्रश्नों के उत्तर पाना सदैव कठिन हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इस अभिलेख की व्याख्या प्रायः असोक की वेदना के प्रतिबिंब के रूप में की जाती है। साथ ही यह युद्ध के प्रति उनकी मनोवृत्ति में परिवर्तन को भी दर्शाता है।
- यद्यपि असोक के अभिलेख आधुनिक उड़ीसा में मिले हैं लेकिन उनकी वेदना को परिलक्षित करने वाला अभिलेख वहाँ नहीं मिला है अर्थात् यह अभिलेख उस क्षेत्र में नहीं उपलब्ध है जिस पर विजय प्राप्त की गई थी।
- राजा की नव विजय की वेदना उस क्षेत्र के लिए इतनी दर्दनाक थी कि राजा इस मुद्दे पर कुछ कह न सका।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

# अभिलेख साक्ष्य की सीमा



- अभिलेखों से प्राप्त जानकारी की भी सीमा होती है।
- कभी-कभी इसकी तकनीकी सीमा होती है। अक्षरों को हलके ढंग से उत्कीर्ण किया जाता है जिन्हें पढ़ पाना मुश्किल होता है।
- अभिलेख नष्ट भी हो सकते हैं जिनसे अक्षर लुप्त हो जाते हैं।
- अभिलेखों के शब्दों के वास्तविक अर्थ के बारे में पूर्ण रूप से ज्ञान हो पाना सदैव सरल नहीं होता क्योंकि कुछ अर्थ किसी विशेष स्थान या समय से संबंधित होते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यद्यपि कई हजार अभिलेख प्राप्त हुए हैं लेकिन सभी के अर्थ नहीं निकाले जा सके है।
- इसके अतिरिक्त और अनेक अभिलेख रहे होंगे जो कालांतर में सुरक्षित नहीं बचे हैं। इसलिए जो अभिलेख अभी उपलब्ध हैं, वह संभवतः कुल अभिलेखों के अंश मात्र हैं।
- एक मौलिक समस्या और भी है यह अभिलेख बड़े और विशेष अवसरों का ही उल्लेख करते हैं। यह जरूरी नहीं है कि जिन्हें हम आज राजनीतिक और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण मानते हैं उन्हें अभिलेखों में अंकित कयिा गया हो।



- उदाहरण के तौर पर खेती की दैनिक प्रक्रियाऐं और रोजमर्रा की जिन्दगी के सुख दुख का उल्लेख अभिलेखों में नहीं है।
- इसके अलावा अभिलेख हमेशा उन्हीं व्यक्तियों के विचार व्यक्त करते हैं जो उन्हें बनवाते थे।
- अर्थात् राजनीतिक और आर्थिक इतिहास का पूर्ण ज्ञान मात्र अभिलेख शास्त्र से ही नहीं मिलता है।
- 19वीं सदी के आखिरी दशकों में और 20वीं सदी के प्रारंभ में इतिहासकार प्रमुख रूप से राजाओं के इतिहास में रुचि रखते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 20वीं सदी के मध्य से आर्थिक परिवर्तन, विभिन्न सामाजिक समुदायों के उदय के विषय में महत्वपूर्ण बन गए।
- हाल के वर्षों में इतिहासकारों की रुचि ऐसे समुदायों के प्रति बढ़ी है जो सामाजिक हाशिये पर हैं।
- इसके लिए प्राचीन स्त्रोतों पर पुर्नविचार करते हुए विश्लेषण की गयी विधियां विकसित होंगी।